I/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Refereed journal

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

स्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

म वर्ष, प्रथम अंक

मार्च-अप्रैल 2018

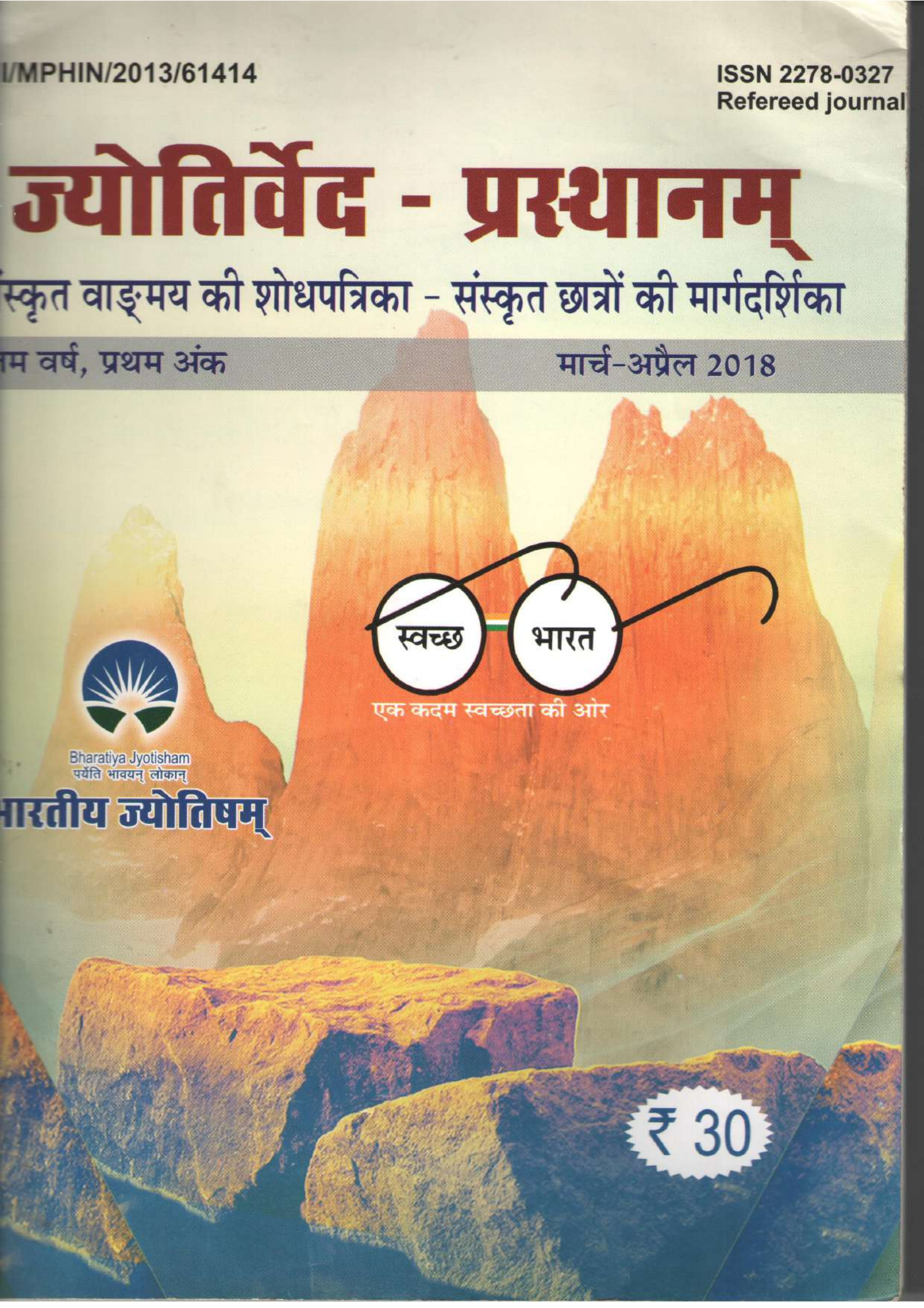

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	वैदिक हिंसा, एक षड्यन्त्र Animal sacrifice in Vedic literature – a conspiracy of faith destruction	डॉ. विवेक शर्मा	02
2.	मानवोपकारिका बुद्धि Pro-human conscience	प्रतिज्ञा आर्या	05
3.	ऋग्वैदिक समाज में राज्य एवं राजा की परिकल्पना The hypothetic positions of king and kingdom in Rigvedic Society	डॉ. अर्चना चौहान	08
4.	प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की वर्तमान में प्रासंगिकता Present day relevance of ancient Indian education system	सपना रावत	12
5.	भारतीय संस्कृति के परिवेश में In context of Indian culture	श्रीमती अंजू विजयवर्गीय	18
6.	स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन Swami vivekananda's educational philosophy	डॉ. गणेशशङ्कर विद्यार्थी	20
7.	आदिकाव्य में ज्योतिर्विज्ञान Jyotirvigyana in Adikavya	डॉ. विवेक शर्मा	22
8.	मूल्यपरक शिक्षा की भूमिका Role of value based education	डॉ. पिंकी मलिक	24
9.	हिमाचल के अभिलेखों में संस्कृत Sanskrit in Himachal's manuscript (of all forms)	ओम प्रकाश	28
10.	आधुनिक परिप्रेक्ष्य में साहित्य Literature in modern context	पङ्कज	31

पुनरीक्षण समिति

प्रो. विद्यानन्द झा
प्राचार्यचर - राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

प्रो. क्षेत्रवासी पण्डा
अध्यक्ष - तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रो. भारतभूषण मिश्र
अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मुम्बई परिसर, मुम्बई

प्रो. हंसधर झा
अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

डॉ. सनन्दन कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठसहायकाचार्य,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

ISSN 2278 - 0327

आदिकाव्य में ज्योतिर्विज्ञान
Jyotirvigyana in Adikavya

डॉ. विवेक शर्मा

(शास्त्री, शिक्षाशास्त्री, साहित्याचार्य, एमए, एमफिल, पीएचडी, UGC NET / JRF (25 / 73) & SET)

सहायकाचार्य, संस्कृतविभाग, हिमाचलप्रदेशकेन्द्रीयविश्वविद्यालय, धौलाधारपरिसर धर्मशाला, कांगड़ा (हि.प्र.)

Abstract - Ramayana is best known as Adi kavya or the first poetic master piece in human history. Jyotish is the best form of knowledge which plays vital role in guiding the human society. There are notable instances in Ramayana which are related to Jyotisha and they are noteworthy and useful when one tries to establish the relevance of Jyotish. The present day researchers need to increase their arena of investigation to the epic culture.

ज्योतिष एक ऐसा शास्त्र है जो असङ्ख्य वर्षों से मानव जाति को अपने आलोक से प्रकाशित करता आ रहा है। ऐसा नहीं है कि ज्योतिर्विज्ञान की उपलब्धता केवल ज्योतिषीय शास्त्रों में ही होती है। अपितु ज्योतिषेतर शास्त्रों में भी ज्योतिर्विज्ञान की उपलब्धता दृष्टिगोचर होती है। कालिदास, माघ आदि ने विस्तार रूप से ज्योतिषीय तत्त्वों का निरूपण अपने-अपने शास्त्रों में किया है।

साहित्य ग्रन्थों की बात करें तो, हिन्दु संस्कृति से पथ प्रदर्शक रूप में प्रतिष्ठित एवं आदि-काव्य नाम से ख्यात रामायण से ही ज्योतिर्विज्ञान का प्रतिपादन का आरम्भ हो गया था। रामायण के कई स्थानों पर आगे घटित होने वाली घटनाओं का कारण ग्रह एवं योगों की स्थितियों को बतलाया गया है। रामायण में ज्योतिषीय तत्त्वों का दर्शन प्रारम्भिक बाल काण्ड में ही होता है जब वाल्मीकि ने प्रभु श्री राम की कुण्डली को प्रस्तुत किया है -

ततो यज्ञे समाप्ते तु ऋतूनां षट् समत्ययुः। ततश्च द्वादशे मासे चैत्रे नावमिके तिथौ॥
नक्षत्रेऽदितिदैवत्ये स्वोच्चसंस्थेषु पञ्चसु। ग्रहेषु कर्कटे लग्ने वाक्पताविन्दुना सह ॥
प्रोद्यमाने जगन्नाथं सर्वलोकनमस्कृतम्। कौशल्याजनयद् रामं दिव्यलक्षणसंयुतम्॥[1]

अर्थात् यज्ञ समाप्ति के पश्चात् जब छः ऋतुएँ बीत गयीं, तब बारहवें मास में चैत्र के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र एवं कर्क लग्न में कौशल्या ने दिव्य लक्षणों से युक्त, सर्वलोक वन्दित जगदीश्वर श्रीराम को जन्म दिया। उस समय सूर्य, भौम, शनि, गुरु और शुक्र ये पाँच ग्रह अपने -अपने उच्च स्थानों में विद्यमान थे तथा लग्न में चन्द्रमा के साथ बृहस्पति विराजमान थे। वाल्मीकि ने प्रभु श्री राम की कुण्डली का साङ्गोपाङ्ग वर्णन कर अपने ज्योतिषीय ज्ञान का परिचय दिया है।

अयोध्या काण्ड में राजा दशरथ और श्री राम का (अभिषेक से पूर्व सन्ध्या में) किया गया संवाद[2] निस्सन्देह ज्योतिष की पराकाष्ठा को दर्शाता है। सर्वप्रथम दशरथ अपशकुनों का वर्णन करते हुये कहते हैं -

अपि चाद्याशुभान् राम स्वप्नान् पश्यामि राघव।
सनिर्घाता दिवोल्काश्च पतन्ति हि महास्वनाः॥[3]

अर्थात् हे राम तुम्हारे राज्याभिषेक से पूर्व मुझे बहुत बुरे सपने आ रहे हैं। ऐसा लग रहा है कि वज्रपात के साथ उल्काएँ गिर रहीं हों। आगे दशरथ कहते हैं कि-

अवष्टब्धं च मे राम नक्षत्रं दारुणाग्रहैः।
आवेदयन्ति दैवज्ञाः सूर्याङ्गारकराहुभिः॥[4]

उक्त खगोलीय स्थितियों के फलादेश को निर्देशित करते हुये दशरथ कहते हैं कि ऐसी स्थिति में राजा घोर आपत्ति में पड़ जाता है और अन्ततो गत्वा उसकी मृत्यु भी हो जाती है।[5] अतः हे रघु आप शीघ्रातिशीघ्र युवराज पद पर अपना अभिषेक करवा लो।[6] आगे दशरथ कहते हैं -

अद्यचन्द्रोऽभ्युपगमत् पुष्यात् पूर्वं पुनर्वसुम्।
श्वः पुष्ययोगं नियतं वक्ष्यन्ते दैवचिन्तकाः॥[7]

अर्थात् महाराज दशरथ ज्योतिषीय स्थितियों को रमणीयता से उपस्थापित करते हुये कहते हैं कि मुझे ज्योतिषियों ने बतलाया है कि आज चन्द्रमा पुष्य से एक नक्षत्र पहले पुनर्वसु पर विराजमान है, अत: निश्चय ही कल वे पुष्य नक्षत्र में रहेंगे। यहाँ दशरथ का कहने का अभिप्राय यह है कि हे राम तुम कल पुष्यनक्षत्र में ही अपना राज्याभिषेक करवा लो।

रामायण के अयोध्याकाण्ड में ही व्याप्त ज्योतिषीय तत्त्वों की बात करें तो जब श्री राम का वन गमन हो रहा था पूरी अयोध्या शोक सागर में डूबी हुई थी। ऐसी स्थिति में जब श्री राम वन जा रहे हैं तो उस समय की ग्रहों की स्थिति का वर्णन करते हुये वाल्मीकि कहते हैं कि –

त्रिशङ्कुर्लोहिताङ्गश्च बृहस्पतिबुधावपि।
दारुणाः सोममभ्येत्य ग्रहाः सर्वे व्यवस्थिता॥[8]

अर्थात् त्रिशङ्कु, गुरु, बुध तथा शुक्र, शनि आदि रात में वक्रगति से चन्द्रमा के पास पहुँचकर क्रूरकान्तियुक्त होकर स्थित हो गये।

ज्योतिष शास्त्र से शकुन शास्त्र का सम्बन्ध तो सर्वविदित ही है। युद्धकाण्ड में विभीषण रावण को राम से युद्ध न करने के लिये समझाने का अत्यधिक प्रयास करते हैं। वे इसी सन्दर्भ में लङ्का में घटित होने वाले कई अपशकुनों का वर्णन करते हैं और कहते हैं कि यह तभी से हो रहें हैं, जब से सीता को लङ्का में लाया गया है।[9] विभीषण रावण से कह रहे हैं कि अग्निकुण्डों में अग्नि प्रज्ज्वलित नहीं हो रही है।[10] वेदाध्ययनशालाओं में, रसोई घरों में साँप दिखाई दे रहें हैं। एवं हवन सामग्री में चींटियाँ पड़ गई हैं।[11] गायों का दूध सूख गया है, अच्छा घास प्राप्त होने पर भी घोड़े उसे आनन्द से ग्रहण नहीं कर रहे हैं।[12] क्रूर कौओं एवं गीधों के झुण्ड नगरी पर मंडराते हुये अमङ्गलसूचक शब्द कर रहें हैं।[13] ऐसे कई अपशकुनों को दर्शाते हुये विभीषण रावण से निवेदन करता है कि देवी सीता श्रीराम को लौटा देनी चाहिये।[14]

इसके अतिरिक्त युद्ध के चलते हुये जब रावण के बाण से श्रीराम घायल हो जाते हैं तो सभी ओर विषाद फैल जाता है। उस स्थिति का ज्योतिषीय दृष्टि से व्याख्या करते हुये वाल्मीकि कहते हैं कि–

रामचन्द्रमसं दृष्ट्वा ग्रस्तं रावणराहुणा।
प्राजापत्यं च नक्षत्रं रोहिणीं शशिनः प्रियाम्।
समाक्रम्य बुधस्तस्थौ प्रजानामहितावहः।[15]

अर्थात् राम रूपी चन्द्रमा को रावण रूपी राहू ने ग्रस्त कर लिया है, एवं ऐसी स्थिति में बुध के देवता प्रजापति ने चन्द्रमा की प्रिया रोहिणी पर आक्रमण करके सम्पूर्ण प्रजावर्ग का अहित कर दिया है। इसके आगे विशाखा नक्षत्र को इक्षवाकुओं का नक्षत्र बतलाया गया है और कहा गया है कि इक्षवाकुओं के नक्षत्र विशाखा नक्षत्र पर आक्रमण कर भौम बैठ गया है।[16] इस तरह रामायण के कई सन्दर्भों में ज्योतिषीय तत्त्वों को आदि कवि वाल्मीकि ने विस्तार से व्याख्यायित किया गया है।

वस्तुत: साहित्य समाज का प्रतिरूप होता है। जो भी समाज में व्याप्त होता है या समाज जिसका अनुकरण करता है, उसका प्रतिपादन साहित्य में दृष्टिगोचर होता है। इस तरह आदिकाव्य रामायण में ज्योतिष शास्त्र की उपलब्धता होने से यह सिद्ध होता है कि रामायण काल में आम जनसमूह ज्योतिष शास्त्र के गूढ़ तत्त्वों से अनभिज्ञ न होकर उससे पूर्ण परिचित था। यही कारण है कि आदिकवि वाल्मीकि ने राम कथा के साथ-साथ ज्योतिषीय सिद्धान्तों, तात्कालिक ग्रहस्थितियों एवं राम इत्यादि की कुण्डलियों को प्रस्तुत किया। अत: आज के समय ज्योतिष क्षेत्र में अनुसन्धान करने वाले शोधार्थियों से अपेक्षा है कि वे अपने ज्योतिष अनुसन्धान के लिये साहित्य की ओर भी अग्रसर हों। तभी ज्योतिषशास्त्र का प्रचार-प्रसार होगा और उसकी स्वीकार्यता में वृद्धि होगी।

सन्दर्भ –

1. रामायण बालकाण्ड, 18 / 8 – 10
2. अद्य प्रकृतय: सर्वास्त्वामिच्छन्ति नराधिपम्।
   अतस्त्वां युवराजानमभिषेक्ष्यामि पुत्रक ॥ रामायण अयोध्याका., 4/16
3. रामायण अयोध्याकाण्ड, 4/17
4. रामायण अयोध्याकाण्ड, 4/18
5. प्रायेण च निमित्तानामीदृशानां समुद्भवे।
   राजा हि मृत्युमाप्नोति घोरां चापदमृच्छति ॥ रामायण अयोध्याका., 4/19
6. रामायण अयोध्याकाण्ड, 4/20
7. रामायण अयोध्याकाण्ड, 4/21
8. रामायण अयोध्याकाण्ड, 41 / 11
9. रामायण युद्धकाण्ड, 10 / 14
10. रामायण युद्धकाण्ड, 10 / 15
11. रामायण युद्धकाण्ड, 10 / 16
12. रामायण युद्धकाण्ड, 10 / 17
13. रामायण युद्धकाण्ड, 10 / 19 – 20
14. रामायण युद्धकाण्ड, 10 / 22
15. रामायण युद्धकाण्ड, 102 / 32
16. रामायण युद्धकाण्ड, 102 / 35